अन्ततः निर्मोल

अनुग्रह द्वारा स्वतंत्र–1

डॉ. डेविड प्लॉट

भारत विभिन्न रूपों में एक अतुल्य देश है। निःसन्देह भारत में कहीं कहीं राजनीतिक/धार्मिक अशान्ति है। सच कहूं तो भारत के अनेक स्थानों में मसीह के अनुयायी होना आसान नहीं है।

भारत के दक्षिणी प्रान्तों में कुछ स्थान, विशेष करके उड़ीसा में, जैसा कि आप जानते हैं, पिछले कुछ समय हिन्दू रुढ़ीवादियों ने विश्वासियों को घोर कष्ट पहुंचाए। उन्होंने उनके घर वरन गांव जला दिए और उन्हें मार डाला।

उड़ीसा में आज विश्वासियों के समुदाय शरणार्थी शिविरों में वास कर रहे हैं।

ऐसे ही स्थानों में वहां हमें कुछ समय बिताने का अवसर प्राप्त हुआ। यह उत्तरी भारत का एक स्थान है हां अधिकांश जनसंख्या मुस्लमान है। हमारे भाइयों और बहनों के लिए वह एक कठिन स्थान है। वहां हम वश्वासियों के एक समूह से वार्तालाप कर रहे थे और उनकी कहानी सुन रहे थे। वहां एक भाई है जो ाज कलीसिया संस्थापक है। वह और उसकी पत्नी दोनों मुस्लमान पृष्ठभूमि से हैं।

पहले उसकी पत्नी मसीही विश्वास में आई तदोपरान्त धीरज धरकर बड़ी शिष्टता के साथ वह अपने पति को भी विश्वास में ले आई। मसीह में विश्वास लाने के कारण वे दोनों परिवार से निकाल दिए गए, ठुकरा दिए गए।

वे तो अपने परिवारों से मेल करना चाहते थे परन्तु लगभग छः माह पूर्व पत्नी के परिवार ने उसे ज़हर देकर मार दिया। उस पुरुष ने उसके कष्टों में भी परमेश्वर के अनुग्रह के प्राचुर्य का उल्लेख किया। निश्चय ही भारत के कुछ क्षेत्रों में मसीह का अनुयायी होना आसान नहीं है।

भारत एक आवश्यकताग्रस्त देश है–सांसारिक आवश्यकताओं से ग्रस्त। यदि आप दिल्ली शहर के किसी झुग्गी–झोपड़ी क्षेत्र में कभी गए हैं? वहां 1 करोड़ 40 लाख की जनसंख्या में से 40 लाख मनुष्य झुग्गी–झोपड़ी में रहते हैं। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि वे कच्चे मकानों में रहते हैं। मेरे विचार में

झुग्गियां 12–12 वर्ग मीटर की ही होंगी प्रत्येक झुग्गी में पांच सदस्यों का परिवार रहता है। बच्चे यहां–वहां भागते फिरते हैं। उनके पास कपड़े नहीं हैं। उस समाज में भूमि पर हर जगह मानवीय मल पड़ा रहता है। सुनने में तो यह सच नहीं लगता परन्तु सच है– सांसारिक दरिद्रता!

वहां सांसारिक दरिद्रता के साथ आत्मिक दरिद्रता भी है। उत्तरी भारत की जनसंख्या लगभग 60 करोड़ है जिसका मात्र 1 प्रतिशत से कम विश्वासी हैं। मैं ने यह आंकड़े पहले सुने थे परन्तु पिछले डेढ़ सप्ताह में मैं ने उनके चेहरे भी देखे।

आप कल्पना कर सकते हैं कि चाहे महानगर दिल्ली हो या दूरस्थ गांव, आप उन चेहरों को देखते हैं जिन्होंने सुसमाचार कभी नहीं सुना।

ऐसा नहीं है कि वे धार्मिक प्रकृति के लोग नहीं हैं। वे अत्यधिक धर्म–कर्म वाले मनुष्य हैं। वे 3 करोड़ 30 लाख देवी देवताओं की उपासना करते हैं। वहां कदम–कदम पर देवी देवता हैं। आप टेक्सी में बैठेंगे तो उसके डेशबोर्ड पर किसी देवी या देवता की मूर्ति या चित्र लगा होगा।

सड़कों के किनारे आप ठेलों में देवी–देवताओं की मूर्तियां बिकते देखेंगे। लोग उन्हें खरीदते हैं कि उनकी पूजा करें। सड़क के किनारे आप देखेंगे कि वे पेड़ों की पूजा कर रहे हैं।

आप कल्पना कर सकते हैं कि करोड़ों जन प्रयास करने में व्यस्त हैं कि देवी–देवताओं के साथ शान्ति बनाएं। उनके लिए परमेश्वर का वह अनुग्रह अबोध है जो हमारे साथ शान्ति बनाना चाहता है।

मैं अपने अध्ययन विषय के बारे में सोच रहा था कि हम किस विषय पर अध्ययन करेंगे तो मुझे स्मरण हुआ कि अनुग्रह कैसा अद्वैत, विशिष्ठ, क्रान्तिकारी और अबोध विचार है, भारत में ही नहीं हमारी कलीसिया में भी।

हमारा जन्म भारत में हुआ हो या अमरीका में, हमारे पापी स्वभाव का एक भाग बलपूर्वक कहता है कि हम परमेश्वर तक पहुंच सकते हैं और परमेश्वर के निकट आने के लिए हमें कुछ करना है। परन्तु अनुग्रह कहता है, "नहीं, तुम कुछ नहीं कर सकते। अनुग्रह हमारे मन पर वार करता है, हमारे घमण्ड की जड़ पर वार करता है और कहता है, "तुम नहीं कर सकते। परमेश्वर ही है जो तुम तक पहुंच सकता हैं, तुम अपने

आप परमेश्वर तक नहीं पहुंच सकते।" यह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। मैं इसे अपने पिछले अध्ययनों के परिप्रेक्ष्य में देख रहा था–आमूल आज्ञाकारिता, आमूल शिष्यता, तो मुझे यह बोध हुआ कि हम में यह धारणा घर कर गई है कि यदि हम यह सब करेंगे तो परमेश्वर के अनुग्रह पात्र बनेंगे। यह एक परीक्षा है।

आप में से कुछ ने सोचा भी होगा कि क्या यह अनुग्रह है? इसमें अनुग्रह कहां है? क्या यह रुढ़ीवाद है? ऐसा नहीं होना चाहिए। क्या हमें अनुग्रह पर विचार नहीं करना चाहिए?

जी हां, हमें अनुग्रह पर ध्यान केन्द्रित करना है। हम कलीसिया में जो भी करते हैं, उस प्रत्येक काम के करने में अनुग्रह केन्द्र में होना है। यदि हम अनुग्रह को अनदेखा करें, यदि हम अनुग्रह से भरे हुए न हों तो हम मसीही विश्वास के अर्थ से चूक जाते हैं और हम उस सन्देश को अर्थहीन बना देते हैं जिसकी हमें संसार में घोषणा करनी है।

इसका अर्थ यह नहीं कि जिन सत्यों को हम देखते आ रहे हैं वे रुढ़ीवादी हैं। हम देखेंगे कि अनुग्रह किस प्रकार आमूल आज्ञापालन का केन्द्र है। अतः मेरे साथ गलातियों की पत्री अध्याय 1 खोल लें।
हम गलातियों की पत्री का संपूर्ण अवलोकन करेंगे। इसका मुख्य कारण यह है कि यह पत्री मुख्यतः कलीसिया में परमेश्वर के अनुग्रह को केन्द्र में रखने के लिए और कलीसिया में बढ़ रहे रुढ़ीवाद के खण्डन में लिखी गई थी।

इस पत्र की श्रोता कलीसियाएं, नवदीक्षितों की कलीसियाएं थीं जो विश्वास में विकासमान थीं। मेरे विचार में, जब परमेश्वर कलीसिया में सामर्थी कार्य करता है तब हम बैरी को कलीसिया में फूट, सन्देह और विभाजन करवाते हुए देखते हैं।

और वास्तव में कलीसिया का आधारभूत, और मैं सोचे बिना रह नहीं सकता कि परमेश्वर हमें त्याग की अधिकाधिक गहराई में ले जाता है– जब हम कलीसिया में उसके अधीन समर्पण करते हैं तब बैरी यह चाहता है कि वह हमारे सुसमाचार को विकृत कर दे।

अतः मैं चाहता हूं कि हम इस से सावधान रहें। मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूं कि हम अनुग्रह और सुसमाचार को समझें। हम अनुग्रह को देखें और समझें कि प्रचार में उसका उल्लेख कब नहीं हो रहा है या

हम समझ पाएं कि शिक्षा में कहां अनुग्रह की कमी है। हमें सुसमाचार की परख में सक्षम होना है। हमें विपरीत सुसमाचार प्रचार को भी देखना है।

गलातिया की कलीसिया के साथ यही हो रहा था। वे विपरीत सुसमाचार को ग्रहण कर रहे थे जिसमें अनुग्रह का स्थान ही नहीं था। अतः हम गलातियों अध्याय 1 से आरंभ करेंगें जो संपूर्ण पुस्तक और अनुग्रह की हमारी समझ का आधार होगा। वह अनुग्रह जो हम में से प्रत्येक के साथ महिमा से संबन्धित है।
अतः सुनिए पौलुस क्या लिखता है। यहां अनेक ऐतिहासिक जानकारियां हैं जो पौलुस के संदर्भों में प्रासंगिक हैं। हम इसे पढ़ें और परमेश्वर से आत्मा द्वारा सहायता मांगे कि उसके वचन की शिक्षा को समझ सकें।

गलातियों अध्याय 1, "पौलुस की—जो न मनुष्यों की ओर से और न मनुष्य के द्वारा, वरन् यीशु मसीह और परमेश्वर पिता के द्वारा, जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, प्रेरित है—और सारे भाइयों की ओर से जो मेरे साथ हैं, गलातिया की कलीसियाओं के नामः परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। उसी ने अपने आप को हमारे पापों के लिये दे दिया, ताकि हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छा के अनुसार हमें इस वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाए। उसकी स्तुति और बड़ाई युगानुयुग होती रहे। आमीन। मुझे आश्चर्य होता है कि जिसने तुम्हें मसीह के अनुग्रह में बुलाया उससे तुम इतनी जल्दी फिर कर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे। परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं: पर बात यह है कितने ऐसे हैं जो तुम्हें घबरा देते, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। परन्तु यदि हम, या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो शापित हो। जैसा हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूं कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो शापित हो। अब मैं क्या मनुष्यों को मनाता हूं या परमेश्वर को? क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूं? यदि मैं अब तक मनुष्यों को ही प्रसन्न करता रहता तो मसीह का दास न होता। हे भाइयो, मैं तुम्हें बताए देता हूं कि जो सुसमाचार मैं ने सुनाया है, वह मनुष्य का नहीं। क्योंकि वह मुझे मनुष्य की ओर से नहीं पहुंचा, और न मुझे सिखाया गया, पर यीशु मसीह के प्रकाशन से मिला। यहूदी मत में जो पहले मेरा चाल—चलन था उसके विषय तुम सुन चुके हो कि मैं परमेश्वर की कलीसिया को बहुत ही सताता और नष्ट करता था। अपने बहुत से जातिवालों से जो मेरी अवस्था के थे, यहूदी मत में अधिक बढ़ता जाता था और अपने बापदादों की परम्पराओं के लिये बहुत ही उत्साही था। परन्तु परमेश्वर की, जिसने मेरी माता के गर्भ ही से मुझे ठहराया और अपने अनुग्रह से बुला लिया, जब इच्छा हुई कि मुझ में अपने पुत्र को प्रगट करे कि मैं अन्यजातियों में

उसका सुसमाचार सुनाऊं, तो न मैं ने मांस और लहू से सलाह ली, और न यरूशलेम को उनके पास गया जो मुझ से पहले प्रेरित थे, पर तुरन्त अरब को चला गया और फिर वहां से दमिश्क को लौट आया। फिर तीन वर्ष के बाद मैं कैफा से भेंट करने के लिये यरूशलेम गया, और उसके पास पंद्रह दिन तक रहा। परन्तु प्रभु के भाई याकूब को छोड़ और प्रेरितों में से किसी से न मिला। जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूं, देखो, परमेश्वर को उपस्थित जानकर कहता हूं कि वे झूठी नहीं। इसके बाद मैं सीरिया और किलिकिया के प्रान्तों में आया। पर यहूदिया की कलीसियाओं ने जो मसीह में थीं, मेरा मुंह कभी नहीं देखा था; परन्तु यही सुना करती थीं कि जो हमें पहले सताता था, वह अब उसी विश्वास का सुसमाचार सुनाता है जिसे पहले नष्ट करता था। और वे मेरे विषय में परमेश्वर की महिमा करती थीं।"

आइए हम प्रार्थना करें। हे परमेश्वर, हम स्वीकार करते हैं कि हम में अनुग्रह विरोधी स्वभाव है और हमें अनुग्रह को समझने के लिए अनुग्रह की आवश्यकता है। इसलिए, हे पिता, हम प्रार्थना करते हैं कि तू प्रथम शताब्दी की कलीसिया के सत्यों को आज 21वीं शताब्दी में पुनर्जीवित कर।
हे परमेश्वर, हम प्रार्थना करते हैं कि तू समझने में हमारी सहायता कर कि अनुग्रह कैसा महिमामय होता है और हे परमेश्वर, मैं विशेष करके इन स्त्री, पुरुषों, किशोर, किशोरियों और बच्चों के लिए प्रार्थना करता हूं क्योंकि वे कर्मों का विचार लेकर तेरे सम्मुख आते हैं।

हे परमेश्वर, हम प्रार्थना करते हैं कि तू हमें अनुग्रह के परिवर्तनकारी सत्य को समझने में सहायता कर और हमारे जीवन बदल दे। हे परमेश्वर, मैं प्रार्थना करता हूं कि तू अपने अनुग्रह द्वारा अनन्तकाल के लिए श्रोताओं के जीवन बदल दे जो हमारे पापी स्वभाव के लिए एक अपरिचित परन्तु हमारे उद्धार के लिए एक महिमामय विचार है।

इस उद्देश्य के निमित्त हम प्रार्थना करते हैं कि तेरा आत्मा हमारी आंखें और मन खोल दे कि तेरा वचन समझें। यीशु के नाम में, आमीन!

हम गलातियों की पत्री अध्याय 1 के प्रत्येक शब्द पर ध्यान देंगे। अतः हम पद 2 से पद 5 पर ध्यान देंगे जो इस अध्याय वरन् संपूर्ण पत्री का आधार है और हमें अनुग्रह और सुसमाचार का परिदृश्य प्रदान करते हैं और अनुग्रह द्वारा स्वतंत्र होने का अर्थ समझाते हैं।

इस पत्री को समझाने के लिए हमें पहले यह देखना होगा कि यह किस को लिखी गई थी। पौलुस संबोधन में लिखता है, "गलातिया की कलीसियाओं के नाम।"

कुछ विचारकों का मानना है कि यह पौलुस का सर्वप्रथम पत्र था जो उसके सेवाकाल में बहुत पहले दक्षिणी गलातिया प्रदेश में स्थापित कलीसियाओं को लिखा गया था। कुछ का मानना है कि इस पत्र का लेखनकाल कुछ बाद का है।

मुख्य विषय लेखनकाल नहीं, यहूदी मत समर्थक घुसपैठियों का है जो कलीसियाओं में आ गए थे। ये यहूदी प्रचारक वे थे जो कहते थे कि उद्धार पाने के लिए आपको मसीह में विश्वास तो करना है परन्तु व्यवस्था पालन भी अनिवार्य है।

मैं आपको प्रेरितों के काम की पुस्तक में एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण मुद्दा दिखाना चाहता हूं। देखिए अध्याय 15– सुसमाचार प्रचार के कारण अधिकाधिक अन्यजाति विश्वास में आ रहे थे। वे यहूदी नहीं थे। अब मुद्दा यह था कि क्या इन नवविश्वासियों के लिए व्यवस्था पालन अनिवार्य है, विशेष करके खतना करवाना?
क्या यह कलीसिया की सदस्यता के लिए आवश्यक है? क्या यह उद्धार के लिए अतिरिक्त अनिवार्यता है? कलीसिया में ऐसे विश्वासियों का एक समूह था जो उद्धार के लिए खतना करवाना आवश्यक मानते थे। प्रेरितों के काम अध्याय 15 पद 1 देखें, "फिर कुछ लोग यहूदिया से आकर भाइयों को सिखाने लगेः 'यदि मूसा की रीति पर तुम्हारा खतना न हो तो तुम उद्धार नहीं पा सकते।"

अब हम यह नहीं जानते कि पौलुस ने इससे पूर्व यह पत्र लिखा था या बाद में परन्तु यह तो निश्चित है कि वह अपनी इस पत्री में यहूदियों की इस शिक्षा का खण्डन कर रहा है।

प्रेरितों के काम अध्याय 15 में आरंभिक कलीसिया के अगुओं में इस विषय पर विचार–विमर्श हो चुका था और उनका निष्कर्ष यह था कि यह विचार सुसमाचार के अनुग्रह को दूषित करता है। उद्धार पाने के लिए खतना करवाना आवश्यक नहीं है।

पद 8 देखें जहां पतरस कहता है, "मन के जांचनेवाले परमेश्वर ने उनको भी हमारे समान पवित्र आत्मा देकर उनकी गवाही दी; और विश्वास के द्वारा उनके मन शुद्ध करके हम में और उनमें कुछ भेद न रखा। तो अब तुम क्यों परमेश्वर की परीक्षा करते हो कि चेलों की गरदन पर ऐसा जुआ रखो, जिसे न हमारे

बापदादे उठा सके थे और न हम उठा सकते हैं।" पद 11 पद ध्यान दीजिए, "हां, हमारा यह निश्चय है कि जिस रीति से वे प्रभु यीश के अनुग्रह से उद्धार पाएंगे; उसी रीति से हम भी पाएंगे।"
यहां कलीसिया का निर्णय क्या था? "यीशु के अनुग्रह से उद्धार..." और उन्होंने इन विजातिय कलीसियाओं को पत्र लिखा, "आपका उद्धार केवल अनुग्रह से ही है। आपको उद्धार पाने के लिए खतना करवाने की आवश्यकता नहीं है।"

यह उनके लिए शुभ सन्देश था और उन्होंने इसे सराहा। वरन् इससे बढ़कर यह अनुग्रह के सुसमाचार की पवित्रता के परिदृश्य को सुरक्षित करना था। अब यहां पौलुस कलीसिया में उपस्थित इन झूठे शिक्षकों की शिक्षा का खण्डन कर रहा है। यहूदी मूलरुप से रुढ़ीवादी थे। अतः मैं चाहता हूं कि आप उनकी पृष्ठभूमि भली भांति समझ लें क्योंकि उस समय की शिक्षा आज भी नाना प्रकार से प्रचलित है।

यद्यपि आज विषय खतना का नहीं है परन्तु आज की कलीसिया में यहूदियों की नाईं अनुग्रह के सुसमाचार में अतिरिक्त विषय जोड़ने की मानसिकता है जिससे उद्धार का मान कम हो जाता है।

मुझे पूरा विश्वास है कि प्रत्येक विश्वासी किसी न किसी रुप में रुढ़ीवादी है क्योंकि हम परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए कहीं न कहीं तो कर्मकाण्ड में विश्वास करते हैं कि परमेश्वर की दृष्टि में स्वीकार्य हों।

हमारे मन में यह धारणा घर कर गई है कि यदि हमने प्रार्थना और बाइबल अध्ययन में अच्छा समय लगाया है तो परमेश्वर हमसे प्रसन्न है परन्तु यदि हमने उचित रुप से प्रार्थना नहीं की और बाइबल अध्ययन नहीं किया या जीवन के अन्य क्षेत्रों में भटक गए हैं तो परमेश्वर अप्रसन्न हो जाएगा।

यह कर्मकाण्ड पर आधारित विश्वास है जो वास्तव में रुढ़ीवाद है। मैं चाहता हूं कि हम रुढ़ीवाद को समझ लें जिससे कि उसे देखकर हम पहचान लें परन्तु हमें सावधान रहना है कि हम किसी ऐसे अभ्यास को रुढ़ीवाद न कहें जो वास्तव में रुढ़ीवाद नहीं है।

रुढ़ीवाद क्या है? पहला, अपनी क्षमता में कुछ करना। यही यहूदियों की शिक्षा थी, "मसीह में विश्वास करके अपनी प्राकृतिक क्षमता को क्रियाशील करें और व्यवस्था पालन करें तथा प्रथाओं पर चलें अर्थात मसीह और कर्म।"

आज यहूदीवाद और खतना तो नहीं है परन्तु जैसा हमने जीवनदायक रक्त में देखा था कि आप एक विशेष प्रार्थना करें और आप को अनुग्रह द्वारा उद्धार प्राप्त होता है।
तो मुझे क्या करना आवश्यक है? मुझे देखना होगा कि मसीही जीवन कैसे जीऊं। अतः मुझे क्या करना चाहिए? इस प्रश्न के उत्तर में हम कर्मों की सूची तैयार कर लेते हैं कि मसीही जीवन में यह होता है, यह होता है, आदि, आदि। अतः अब मैं यह सब करने का प्रयास करुंगा या करुंगी।

इस प्रक्रिया में हम अनुग्रह को पीछे छोड़ देते हैं। हमने प्रार्थना तो कर ली है और अब हम मसीह जीवन को अपने आप जीने का मार्ग खोजते हैं। यह परमेश्वर को प्रसन्न करने की आज की कर्मकाण्ड जीवनशैली है। हमारा यह प्रयास ही रुढ़ीवाद है।

दूसरा, अपने नियम बनाना। यहूदी प्रचारक सुसमाचार अर्थात नई वाचा को लेकर पुरानी वाचा, पुराने नियम के विधि–विधान में संयोजित कर रहे थे। परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ एक नई वाचा बांधी थी जिसकी शर्तें नये नियम में विहित हैं।

वे पुरानी वाचा की शर्तों को इस वाचा में जोड़ रह थे। जब हम कहते हैं कि "परमेश्वर की दृष्टि में ग्रहणयोग्य होने के लिए आपको यह, यह, यह करना आवश्यक है।" तो हम भी वही करते हैं जो नये नियम में नहीं है।

यदि हम कहें कि उद्धार पाने के लिए आपको रेस्तरां में भोजन नहीं करना है तो यह नियम निर्धारण है। यह तो नये नियम का आदेश नहीं है। यह एक अच्छा उदाहरण तो नहीं है परन्तु बात नियम बनाने की है। ऐसा करना सुसमाचार का मान घटाना है और रुढ़ीवादी बनना है।
यहां मैं आपको चिताना चाहता हूं कि जब हम नये नियम के आदेशों के पालन की चर्चा करते हैं तो वह रुढ़ीवाद नहीं, मसीही विश्वास है।

अतः हमने अपने इन अध्ययनों में अनेक आदेश देखे हैं, यीशु कहता है, पौलुस कहता है, धर्मशास्त्र कहता है, "यह करो, यह करो..." तो वह रुढ़ीवाद नहीं है। यह सुसमाचार का केन्द्र है, यह मसीही विश्वास है।
परन्तु सावधान रहें कि अपने नियम इसमें अलग से न जोड़ें। अपने नियमों के अनुसार अपनी शक्ति का उपयोग न करें।

तीसरा, यह रुढ़ीवाद का मुख्य रुप है। परमेश्वर का समर्थन प्राप्त करने के लिए कर्म करना। रुढ़ीवाद का मुख्य विचार यह है कि कर्म करने से परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त होता है। यही यहूदी कह रहे थे, "आप जितना अधिक विधि–विधान का पालन करेंगे उतना ही अधिक आप परमेश्वर की दृष्टि में ग्रहणयोग्य ठहरेंगे।"

मैं कह चुका हूं कि हमारे मन में यह धारणा वास कर गई है, "यदि मैं अधिक प्रार्थना करुं, यदि मैं अधिक बाइबल अध्ययन करुं, यदि मैं अपने मसीही जीवन में यह करुं या वह करुं तो परमेश्वर मुझ से प्रसन्न होगा और यदि न करुं तो वह निराश हो जाएगा।"

परन्तु हम नई वाचा के सुसमाचार के सामने हैं। मसीही विश्वास का विस्म्यकारी सत्य यह है कि आपसे परमेश्वर का प्रसन्न होना आपके कार्यों पर निर्भर नहीं है।

हम में उपस्थित रुढ़ीवादी कहता है, "निश्चय ही मुझे कुछ करना चाहिए, निष्क्रिय नहीं बैठना है।" परन्तु सुसमाचार का सत्य तो यह है कि परमेश्वर आपके कामों ही से प्रसन्न नहीं होता है।
पौलुस गलातियों अध्याय 1 में यही तो दृढ़तापूर्वक कह रहा है। वह तो यहां तक कहता है कि यदि कोई अनुग्रह से हटकर कुछ और शिक्षा दे तो मैं या स्वर्गदूत भी दण्ड पाएं। यह अत्यधिक गंभीर वक्तव्य है।
मार्टिन लूथर जिसे धर्मसुधार का पिता कहा जाता है, उस युग में था जब कलीसिया का आदेश था, "नियमों का पालन करते हुए यथाशक्ति कर्म करो।"

कलीसिया ने मसीह में विश्वास लाने के साथ–साथ अनेक नियम स्थापित कर दिए थे जिनका पालन अनिवार्य था। मार्टिन लूथर गलातियों की पत्री के आधार पर अड़ गया। वह ज़िदद्ी था और यहां आकर उसने ज़िदद् पकड़ ली।

सुनिए उसने क्या लिखा, "परमेश्वर मेरा साथ दे तो मेरा मस्तक सबसे कठोर होगा। जी हां, मैं मन से कुछ हूं कि इस बात पर विद्रोही और दुराग्रही माना जाऊं। मैं स्वीकार करता हूं कि मैं हूं और सदैव साहसी और कठोर बना रहूंगा और किसी भी प्राणी को एक इंच स्थान नहीं दूंगा। सबका निष्कर्ष यही हो कि हम अपनी सम्पदा, अपना नाम, अपना जीवन और अपना सर्वस्व निछावर कर देंगे परन्तु सुसमाचार और मसीह यीशु में विश्वास हम कभी नहीं छिनने देंगे। प्रत्येक विश्वासी गर्व करे और चूके नहीं कि मसीह का इन्कार करे।"

दूसरो शब्दों में, वह कह रहा था, "मैं अनुग्रह के सुसमाचार रुपी आधार पर खड़ा हूं और मैं हिलाया नहीं जा सकता। मैं यहां गर्व से खड़ा हूं।" यही पौलुस कहता है। गलातियों अध्याय 6 में उसने कहा, "ऐसा न हो कि मैं अन्य किसी बात का घमण्ड करुं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का..."

हम क्रूस से नहीं हटेंगे क्योंकि यहीं हमारा विश्वास उठता और गिरता है, तथापि हमारे मन और कलीसिया में मानसिकता बसी रहती है जो हमें अनुग्रह से दूर ले जाती है।

पौलुस इसके विषय क्या कहता है? आप और मैं अपने मन में इसके विषय क्या सोचते हैं? कर्मकाण्ड की हमारी मानसिकता के बारे में? इसके उत्तर में मैं दो मूलभूत तथ्य प्रकट करता हूं जो प्राथमिक या आरंभिक हैं परन्तु सुसमाचार के महिमामय सत्य हैं जो रुढ़ीवाद का खण्डन करते हैं।

अतः हमने देखा है कि रुढ़ीवाद क्या है और अब उसका उन्मूलन देखेंगे। दो तथ्य– पहला, सुसमाचार स्वतंत्र है। अतः हम पद 3, 4 और 5 पर मनन करेंगे। मैं चाहता हूं कि आप पौलुस को सुनें। आरंभ में वह कहता है, "गलातिया की कलीसियाओं के नामः परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।" "अनुग्रह" और "शान्ति" ये दो शब्द आध्यात्मिक अभिप्राय से पूर्ण हैं।

अनुग्रह– पौलुस के मनपसन्द शब्दों में से एक नये नियम में पौलुस इस शब्द को सौ बार काम में लेता है। जो अन्य सब सुसमाचार लेखकों द्वारा प्रयोग किए गए इस शब्द के योग का दोगुणा है। संपूर्ण गलातियों की पत्री में वह इस शब्द का बहुत उपयोग करता है।

आप जहां जहां इस शब्द को देखें उस पर गोला बना दें। अध्याय 1:3– परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।

पद 15– "परन्तु परमेश्वर की, जिसने मेरी माता के गर्भ ही से मुझे ठहराया और अपने अनुग्रह से मुझे बुला लिया।"

2:9– "जब उन्होंने उस अनुग्रह को जो मुझे मिला था जान लिया..."
2:21– मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता, क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती, तो मसीह का मरना व्यर्थ होता।

5:4– तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो। यहां पौलुस वास्तव में व्यावहारिक बात करता है कि अनुग्रह से कभी नहीं गिरना।

6:18– आरंभिक अभिवादनस्वरुप, हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे, आमीन! बार बार अनुग्रह! पौलुस यह प्रकट करना चाहता है कि अनुग्रह सुसमाचार का लाल धागा है जो हमारे विश्वास के हर एक पक्ष में व्याप्त है। परमेश्वर का अनोपार्जित पक्ष, यही अनुग्रह है।

पौलुस के कहने का अभिप्राय यह है कि सुसमाचार निर्मोल है, उद्धार निर्मोल है, दया निर्मोल है। परमेश्वर की प्रसन्नता हमारे कर्मों पर नहीं हमारे लिए उसके कामों पर आधारित है। मैं आपको दिखाता हूं कि परमेश्वर का काम क्या है? सुसमाचार में परमेश्वर ने क्या अनुग्रहकारी काम किया?

पहला, पिता परमेश्वर ने हमारे उद्धार का प्रवर्तन किया। आप जो देखते हैं वह है, "परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।" यहां पिता और पुत्र दोनों एक साथ हैं। पिता क्या करता है? पिता हमारे उद्धार का प्रवर्तन करता है। पद 4 के अन्त में वह कहता है, "पिता की इच्छा के अनुसार हमें इस वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाए।" परमेश्वर ने अपनी इच्छा से सुसमाचार तैयार किया जो पूर्णरुप से उसके अनुग्रह पर आधारित हमारे उद्धार का प्रवर्तन है।

पौलुस यही कहता है। पद 13 में इसका उदाहरण देखिए। पौलुस अपनी कहानी सुनाता है कि उसने कहां से उद्धार पाया। वह पहले अपने कार्यों का वर्णन करता है तब वह कहता है कि परमेश्वर ने उसके जीवन में क्या किया। "यहूदी मत में जो पहले मेरा चाल–चलन था उसके विषय तुम सुन चुके हो कि मैं परमेश्वर की कलीसिया को बहुत ही सताता और नष्ट करता था।" पौलुस एक प्रकार से आतंकवादी था। वह नगर नगर जाकर कलीसिया को नष्ट करता था। वह सुनिश्चित करता था कि विश्वासी मार डाले जाएं। मसीह के नाम के कारण उन्हें कष्ट दिया जाए। पद 14 में वह कहता है, "अपने बहुत से जातिवालों से जो मेरी अवस्था के थे, यहूदी मत में अधिक बढ़ता जाता था और अपने बापदादों की परम्पराओं के लिए बहुत ही उत्साही था।"

इसके बाद पद 15 में परिवर्तन देखिए, "परन्तु परमेश्वर की जिसने माता ही के गर्भ से मुझे ठहराया और अपने अनुग्रह से बुला लिया, जब इच्छा हुई कि मुझ में अपने पुत्र को प्रगट करे कि मैं अन्यजातियों में उसका सुसमाचार सुनाऊं..."

यह मेरा मनभावन पद है। पौलुस कहता है कि उसने यह सब किया परन्तु वह अनुग्रहकारी परमेश्वर को जिसने जीवन दिया प्रसन्न करने के लिए निरर्थक था। प्रेरितों के काम अध्याय 9 में पौलुस के साथ दमिश्क के मार्ग पर यही हुआ था। चूकें नहीं, पौलुस यहूदी धर्म से असन्तुष्ट नहीं हुआ था कि किसी अन्य मार्ग की खोज करे। वह यहूदी धर्म का कट्टरता से पालन करता था। कट्टरता से कलीसिया को सताता था। वह तो सुसमाचार की खोज में कभी था ही नहीं परन्तु सुसमाचार ने उसे खोजा। क्या यह एक अद्‌भुत बात नहीं?

देवियों और सज्जनों, आवश्यक नहीं कि हमारी कहानी यही हो, ठीक पौलुस जैसी गवाही हो परन्तु हर एक विश्वासी में यह निश्चित है कि हमारे पास एक परमेश्वर है जिसने हमें जगत की सृष्टि से पूर्व ही मसीह में चुन लिया था– इफिसियों 1, अपने प्रेम में उसने हमें अपने लेपालक पुत्र पूर्व नियत किया– अपने अनुग्रह की महिमा के निमित्त अपनी इच्छा और उद्‌देश्य द्वारा। यही शुभ सन्देश है।

हम में से एक भी जन परमेश्वर की खोज में नहीं था। उसने हमें खोजा। हमने न तो अपनी योग्यता द्वारा या अपने कर्मों द्वारा उद्धार प्राप्त किया। दया आपके और मेरे पास स्वयं आई क्योंकि परमेश्वर ने अपने अनुग्रह में हमें खोजा। यह सुसमाचार है। सुसमाचार निर्मोल है। यह एक ऐसे पिता का चित्रण है जो हमारे साथ संबन्धों का प्रवर्तन करता है और हमारे पीछे आता है।

यह तो बहुत अच्छी बात है परन्तु यहूदियों का कहना था कि मात्र इसके द्वारा उद्धार प्राप्त नहीं होगा। पौलुस अपनी बात कहने में बहुत आगे बढ़ जाता है। यहां ऐतिहासिक जानकारियां बहुत हैं परन्तु इन से हमें क्या करना है।

पौलुस अपने प्रेरित होने और अपने सुसमाचार की रक्षा कर रहा है। वह कहता है, "यह सुसमाचार मनुष्य के विचार नहीं है, मैं ने इसका प्रतिपादन नहीं किया है।"

पद 11, "हे भाइयों, मैं तुम्हें बताए देता हूं कि जो सुसमाचार मैं ने सुनाया है, वह मनुष्य का नहीं। क्योंकि वह मुझे मनुष्यों की ओर से नहीं पहुंचा, और न मुझे सिखाया गया, पर यीशु मसीह के प्रकाशन से मिला।" यह परमेश्वर के अनुग्रह से प्राप्त हुआ है। यह मेरा बनाया हुआ नहीं है।

यह सुसमाचार, आप ही सोचें, इसका सन्देश, हमारे घमण्ड से सर्वथा विपरीत है। एक परिपूर्ण पवित्र परमेश्वर मनुष्य बना और इस पृथ्वी पर सिद्ध जीवन व्यतीत किया जिससे कि वह विद्रोही पापियों के लिए क्रूस पर मरे– उन पापियों के लिए जिन्होंने उसे त्याग अन्य वस्तुओं की उपासना की।

प्रत्येक मनुष्य, चाहे उसका अतीत कैसा भी अन्धकारमय क्यों न रहा हो, चाहे उनका विद्रोह जानबूझकर ही क्यों न किया गया हो, यदि उसमें विश्वास लाए तो अनन्त जीवन पाए और उसके साथ सदा का मेल–मिलाप करे।

यह किसी की कल्पना नहीं हो सकती। यह सुसमाचार मनुष्य की रचना नहीं है। यह परमेश्वर द्वारा प्रकट किया गया है और पौलुस कहता है, "यदि हम इस सुसमाचार को अस्वीकार करते हैं तो हम परमेश्वर को अस्वीकार करते हैं।"

इसी कारण वह कहता है, "इस सुसमाचार को त्यागने का अर्थ है कि तुम अपने बुलानेवाले को त्यागते हो।" क्योंकि पिता परमेश्वर हमारे उद्धार का प्रवर्तक है। पुत्र परमेश्वर ने हमारा उद्धार सिद्ध किया है।

अब पद 3 पर लौट आइए। "परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।" रेखांकित कीजिए, "उस ने अपने आप को हमारे पापों के लिए दे दिया...(पद 4)"

यह सुसमाचार का केन्द्रिय सत्य है। उद्धार मनुष्य के कामों से नहीं है परन्तु जो कुछ मसीह ने किया, उस ही से है। मसीह ने उद्धार के लिए आवश्यक हर एक कार्य पूरा किया। उसने हमारे पापों के कारण हमारे पापों के स्थान पर अपने आप को बलि किया। अध्याय 2 पद 20 में भी यही शब्द "दे दिया" काम में आया है। अध्याय 3 पद 13 में भी यूनानी भाषा में यही शब्द काम में आया है।

यीशु ने क्रूस पर हमारे पापों के कारण हमारे स्थान पर अपने आप को दे दिया– आपका और मेरा दण्ड भोगा। उस ने हमारे उद्धार के लिए आवश्यक सब कार्य किए। उसने हमारे लिए यह कार्य सिद्ध किया। परन्तु यहूदियों का कहना था, "यह सच है कि यीशु ने क्रसू पर अपनी जान दी। जी हां, आपको उस में विश्वास करना आवश्यक है परन्तु इसके साथ आपको व्यवस्थापालन भी करना है।" इस प्रकार वे क्रूस पर यीशु की मृत्यु और कार्य का मान कम कर रहे थे।

हमें यहां अत्यधिक सावधान रहना है। अनुग्रह में कुछ भी जोड़कर हम सुसमाचार को अशुद्ध करते हैं। उनकी प्रचार युक्ति देखिए। उन्होंने सीधा सीधा प्रचार नहीं किया कि मसीह में विश्वास के साथ यह सब करना आवश्यक है कि उद्धार पाओ। नहीं, उन्होंने बड़ी चतुराई से इसका प्रचार किया जैसे आज हम अनेक रीति–रिवाज़ों को कलीसिया में ले आते हैं और कहते हैं, "मसीह में विश्वास करने के लिए यह सब आवश्यक है कि आप परमेश्वर के समक्ष ग्रहणयोग्य ठहरो।"

सत्य तो यह है कि अनुग्रह में अन्य कुछ भी जोड़ना, सुसमाचार की नींव का मान घटाना है। आप कहेंगे, "विश्वास के साथ–साथ यह सब करने में बुराई क्या है?"

मैं आपको एक उदाहरण देकर समझाता हूं। यदि मैं आपको स्वच्छ पेय जल देता हूं और आपके सामने उस में एक बूंद विष डाल देता हूं तो क्या आप उसे पीएंगे? निश्चय ही आप कहेंगे, "नहीं।"
वह जल तो शुद्ध है केवल एक बूंद विष ही तो उसमें है। पौलुस यही समझाना चाहता है कि सुसमाचार में एक बूंद विष डालने से वह पूरा विषाक्त हो जाता है।

हम अनुग्रह में कर्मों को अंश मात्र भी नहीं जोड़ सकते। सुसमाचार ऐसा नहीं कहता। सुसमाचार कहता है, "परमेश्वर के समक्ष आपका स्वीकरण केवल क्रूस पर मसीह के उद्धारक काम के कारण है।"
अतः आप ने कितनी भी प्रार्थना की हो या कितना भी बाइबल अध्ययन किया हो, कितने भी लोगों को गवाही दी हो आदि सब क्रूस पर मसीह को काम के कारण है और परमेश्वर के समक्ष आप का ग्रहण किया जाना यीशु पर आपके विश्वास के द्वारा है।

केवल यही अनुग्रह है, केवल यही सुसमाचार है। इसी में हमारा निर्वाह है। यही कारण है कि हम पल–प्रति–पल मसीह में बने रहते हैं क्योंकि हमें परमेश्वर के ग्रहणयोग्य होने के लिए प्रति पल उसकी आवश्यकता है। परमेश्वर से हमारा संबन्ध हमारे लिए किए गए यीशु के कार्यों पर आधारित है।
अतः जब हम यीशु को थामें रहते हैं, यीशु में विश्वास करते हैं तो हम जानते हैं कि हमारा संबन्ध परमेश्वर से बना हुआ है, परमेश्वर के साथ हमारी शान्ति बनी हुई है– हमारे एक भी काम के कारण नहीं परन्तु हमारे जीवन में मसीह की उपस्थिति के कारण। इसमें हमें कुछ भी नहीं जोड़ना है क्योंकि अनुग्रह में एक भी काम जोड़ने से सुसमाचार निन्दित होता है।

अब ऐसी दशा में सुसमाचार अलोचना का विषय बनता है जैसा यहूदी कहते हैं कि यह विचार व्यवस्था विरोधी है और इसका अर्थ यह हुआ कि हम जैसा चाहें वैसा जीवन जीएं। इस प्रकार वे पौलुस और सुसमाचार को लज्जाजनक बना देते हैं।

निःसन्देह ऐसा अनुग्रह संकटमय होता है। यहां हमें स्मरण रखने की आवश्यकता है कि अनुग्रह में कर्म जोड़ने से हम सुसमाचार की निन्दा करते हैं और दूसरी ओर यदि हम अनुग्रह को तुच्छ जानें तो वह सुसमाचार को गलत समझना है।

अध्याय 2 पद 14 में पौलुस कहता है कि अनुग्रह तुच्छ नहीं है। इसमें यीशु को क्रूस पर अपनी जान गंवानी पड़ी थी। उसने हमारे पापों के लिए अपने प्राणों की आहुति दी।

अनुग्रह तुच्छ नहीं है, वह परिवर्तनकारी है– जीवन बदल देता है। अध्याय 2 पद 14 में पौलुस, पतरस एवं अन्यों के व्यवहार के बारे में कहता है। इसे सुनिये, "जब मैं ने देखा कि वे सुसमाचार की सच्चाई पर सीधी चाल नहीं चलते..." आप इसमें निहित अर्थ समझे? एक जीवनशैली है जिससे सुसमाचार की सच्चाई प्रकट होती है और यह सच्चाई अपने आप ही जीवन में परिवर्तन ले आती है।

अतः अनुग्रह के सुसमाचार के आ जाने पर आपका जीवन पहले जैसा नहीं रहता है। यह आपके कर्म नहीं हैं जो परमेश्वर के सम्मुख ग्रहणयोग्य होने के लिए सुसमाचार में जोड़े जाएं। यही अनुग्रह जो हमें परमेश्वर के समक्ष ग्रहणयोग्य बनाता है हमारे जीवन में आमूल परितवर्तन ले आता है।

सच कहें तो यहीं आकर नये नियम में उलझन उत्पन्न होती है क्योंकि हमें कहा गया है कि हमारा उद्धार केवल अनुग्रह से है। हमें कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है।

परन्तु यीशु तो कहता है कि जब तक हम अपना सर्वस्व त्याग न दें तब तक हम उसके शिष्य नहीं हो सकते अर्थात हमें अपना सब कुछ बेचकर कंगालों में बांट देना है। ऐसा करने पर हमें स्वर्ग में धन प्राप्त होगा।

यूहन्ना अध्याय 15 में यीशु ने कहा, "यदि तुम मेरी आज्ञा मानोगे तो मेरे मित्र होगे।" यदि हमें ज्ञात न हो कि ये यीशु के शब्द हैं तो अति संभव है कि हम उसे रुढ़ीवादी कहें, "आपके कहने का अर्थ क्या है कि हमें

अपना सब कुछ त्याग कर यह करना है या वह करना है? यहां आकर आप कलीसिया में यीशु के वचन सुनते समय उलझन में पड़ जाते हैं।"

पौलुस वरन् याकूब भी–पौलुस कहता है कि हम विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं। दूसरी ओर याकूब कहता है, कर्म बिना विश्वास मृतक है।

याकूब के अनुसार आपके कर्म आपके विश्वास का प्रमाण है। यहां तनाव उत्पन्न होता है। इसी कारण, जैसा मैं ने कहा, मार्टिन लूथर को गलातियों की पत्री अति मनभावन थी। उसे याकूब की पत्री नहीं भाती थी। एक जगह तो उसने लिखा, "मेरा तो मन करता है कि याकूब को चूल्हे में डाल दूं।"

हम ऐसा नहीं कर सकते। तो हम क्या करें। हमें उसे समझना है। क्या यह विश्वास है या विश्वास और कर्म? इफिसियों 2:8 में पौलुस अनुग्रह की बात करता है, "विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है, और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।"

अब 2 थिस्सलुनीकियों अध्याय 1 पद 7 में पौलुस कहता है कि यीशु उन सबको दण्ड देगा जो सुसमाचार का आज्ञापालन नहीं करते। अतः स्पष्ट है कि अनुग्रह को भ्रमित विचारों द्वारा निन्दित न किया जाए।
ये दो सुसमाचार नहीं अपितु नये नियम का एक ही सुसमाचार है। ऐसा नहीं है कि यीशु का एक सुसमाचार है और पौलुस या याकूब या पतरस का दूसरा सुसमाचार है। हमें यह समझना आवश्यक है कि नये नियम में अलग अलग लेखक भिन्न–भिन्न पृष्ठभूमियों के श्रोताओं को लिख रहे थे।

यहां पौलुस गलातिया के विश्वासियों को लिख रहा है जो अनुग्रह के साथ कर्मों को भी बराबर की मान्यता दे रहे थे। अतः पौलुस अनुग्रह पर बल दे रहा है– श्रोता विश्वासी तो थे परन्तु वे गरीब और आवश्यकताग्रस्त जनों के प्रति निश्चिन्त थे। अतः वह कहता है, "ऐसे विश्वास से क्या लाभ?" गलातियों 2:14– सुसमाचार की सच्चाई पर सीधी चाल नहीं चलते। अनुग्रह की निन्दा और उसमें कुछ जोड़ने को हम निवार्य कैसे बनाएं? गलातियों की पत्री हमारी सहायता करेगी कि हम अनुग्रह में विश्वास करने के द्वारा सुसमाचार पर अध्ययन करें और यहां हमारा मुख्य शब्द है, विश्वास–अनुग्रह में विश्वास।

अतः हम देखेंगे कि हम केवल अनुग्रह द्वारा उद्धार पाते हैं और विश्वास ही कुंजी है– परमेश्वर के अनुग्रह और हमारे उद्धार को जोड़ने वाली कड़ी।

हमारा विश्वास परमेश्वर द्वारा ही दिया गया वरदान है और यही संपूर्ण दृश्य को शुभ–सन्देश अर्थात सुसमाचार बनाता है। अतः सुसमाचार निर्मोल है। यह संपूर्ण रुप तथा परिपूर्णरुप से अनुग्रह के द्वारा है। "परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। उसी ने अपने आप को हमारे पापों के लिए दे दिया।" पिता परमेश्वर ने हमारे उद्धार का प्रवर्तन किया और पुत्र परमेश्वर ने उसे क्रूस पर पूरा किया। तथापि यह मूल्यरहित नहीं है।

दूसरा सत्य– सुसमाचार मुक्तिदायक है। यही नहीं कि सुसमाचार हमें निर्मोल प्राप्त है। यह हमें मुक्ति भी प्रदान करता है।

गलातियों अध्याय 1 पद 4 में पौलुस कहता हे, "उसी ने अपने आप को हमारे पापों के लिए दे दिया ताकि... हमें इस वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाए।" उसने क्रूस पर अपना जीवन बलिदान किया। क्यों? हमें इस वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाने के लिए। यह "छुड़ाना" शब्द एक महान शब्द है। इसका परिदृश्य भी महान है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में आप देखेंगे कि इस्राएल के वंशजों को मुक्ति मिली। यह वही शब्द है जो मिस्र से उनकी मुक्ति के लिए काम में किया गया था। पतरस को बन्दीगृह से निकाला गया, पौलुस भीड़ से बचाया, वहां यही शब्द लिखा है।

गलातियों को लिखी पौलुस की पत्री 1:4 में यही शब्द काम में लिया गया है जो हमारे उद्धार का उल्लेख करता है। यह हमारे उद्धार का एक महान चित्रण है। अब प्रश्न यह है, हमें किससे छुड़ाया गया है? वर्तमान बुरे संसार से। यहां छुड़ाए जाने का अर्थ मात्र मुक्ति ही नहीं वरन् किसी के अभिचार से निकाल लेना।

पौलुस जो परिदृश्य प्रदान कर रहा है, वह इस वर्तमान संसार की बुराई का है जो पूर्णरुपेण परमेश्वर के वचन के विपरीत है। अब यह तो स्पष्ट है कि हम इस संसार से हटाए नहीं गए हैं। हम यहीं हैं परन्तु हम इस संसार की रीतियों और मार्गों से बचा लिए गए हैं।

पौलुस जो कह रहा है वह उस विचार का खण्डन है जिसके अनुसार सुसमाचार पाप और व्यवस्था से रहित आचरण की अनुमति देता है। पौलुस कहता है, "ऐसा नहीं है।" अनुग्रह का सुसमाचार मुक्ति का सुसमाचार है जिसमें आप मुक्त हैं और आपको सांसारिक आचरण नहीं रखना है, उसका सा सोच–विचार भी नहीं रखना है, आपकी रुचियां भी संसार के सदृश्य न हों और आप सांसारिक शौक भी पूरे न करें।

क्योंकि आपको उससे छुड़ाकर मुक्त किया गया है। अब आप इस संसार की रीतियों के दास नहीं हैं। आपको एक सर्वथा भिन्न जीवन जीने के लिए मुक्त किया गया है। गलातियों में, विशेष करके अध्याय 5 और 6 में पौलुस यही चर्चा करेगा। वह हमें समझाएगा कि परमेश्वर ने हम में अपने आत्मा का अन्तर्वास करवाया है जो स्वतंत्रता का आत्मा है जो हमें मसीह की उपस्थिति का आचरण करने के लिए प्रेरित करता है जैसे मसीह का व्यवहार, मसीह के वचन, मसीह के सदृश्य विचार आदि।

अब क्योंकि मसीह ने हमें इस वर्तमान संसार की बुराई से मुक्ति दिला दी है इसलिए वह हमें संतृप्त करेगा। सुसमाचार हमें इस संसार के पाप से मुक्ति दिलाता है अर्थात पापी स्वभाव एवं कार्यों से। पुराने जीवन मूल्यों से जिनमें हम बच्चे थे, अब हम उनसे मुक्त हैं। हम मुक्त होकर शून्य में नहीं आ गए। पौलुस कहता है, "हम मसीह में स्वतंत्र हैं, हमारे मन में मसीह की उपस्थिति हमें दिन–प्रतिदिन उसके जीवन का अनुभव प्रदान करती है।"

यह सुसमाचार का सौंदर्य हैं और इसी कारण हम उन तथ्यों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं और रुढ़ीवाद कहकर अनदेखा नहीं करते हैं। अब हम कहें कि हम इन आज्ञाओं को अपनी क्षमता में पूरा करें या उसके लिए नियम बना लें और सोचें कि ऐसा करने से हम परमेश्वर की दृष्टि में ग्रहणयोग्य ठहरेंगे तो निःसन्देह यह रुढ़ीवाद है।

परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह के कारण यदि हम सुसमाचार के कठोर नियमों को सुनते हैं अर्थात प्रभु यीशु के वचनों को सुनते हैं और कहते हैं, "मैं स्वयं इसे पूरा करने में अयोग्य हूं परन्तु अन्तर्वासी मसीह के सामर्थ्य में मैं यह कर सकता हूं। मैं उसके वचनों के द्वारा इसे कर सकता हूं न कि अपने प्रतिपादित नियमों के द्वारा परन्तु इसलिए नहीं कि मुझे परमेश्वर से स्वीकृति पाना परन्तु इसलिए कि मुझे मसीह में परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।"

इसका सौंदर्य यही है कि हम मुक्त हैं। अब हम अनुग्रह से जी रहे हैं। हम प्रार्थना मात्र करके अनुग्रह को अनदेखा नहीं कर रहे हैं। हम अनुग्रह में ही आचारण कर रहे हैं। प्रातः काल नींद से जागने पर हमें सांस लेने के लिए उसके अनुग्रह की आवश्यकता होती है। हमें बात करने के लिए, चलने के लिए अनुग्रह की आवश्यकता है। नये नियम की प्रत्येक बात मानने के लिए हमें अनुग्रह की आवश्यकता है, प्रार्थना के लिए, वचन के मनन में, हर काम में हमें अनुग्रह की आवश्यकता है। हम हर पल, हर दिन अनुग्रह पर निर्भर रहते हैं। अनुग्रह हमें पूर्णरुपेण से संतृप्त करता है। और अनुग्रह हमारे व्यक्तित्व से प्रवाहित होता है क्योंकि मसीह के अनुग्रह द्वारा, पहली बार हम मुक्त होकर वैसे ही जी सकते हैं जैसा परमेश्वर ने हमें जीने के लिए रचा था– इस संसार के बन्धनों से मुक्त!

भाइयों और बहनों, यदि आप किसी पाप विशेष से संघर्ष कर रहे हैं जिसमें से निकलना आपके लिए असंभव प्रतीत होता है तो मैं आपको स्मरण कराता हूं कि आप उस पाप से पहले ही मुक्त हो गए हैं। आप पाप के दबाव से और प्रभुता से मुक्त किए जा चुके हैं।

उसकी प्रभुता अब आप पर नहीं है। आप मसीह के सामर्थ्य और अनुग्रह के द्वारा मुक्त हैं, उसने क्रूस पर वह पाप जीत लिया है। आप स्वतंत्र हैं।

आप पाप के अन्तःकरण से भी मुक्त हैं। जो मसीह में है उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं है। जीवन के आत्मा ने आपको पाप और सन्देह की व्यवस्था से मुक्ति दिलाई है। आप पराजित विश्वास से मुक्त हैं। अब ऐसा कुछ नहीं रहा। हमारे पास अनुग्रह है। हमारे पास प्रति पल अनुग्रह है।
सुसमाचार निर्मोल है और मुक्तिदायक है। उसके अनुग्रह से हम इस संसार के पाप से मुक्त हैं और उसकी कृपा से हम इस संसार के साथ जीवन बांटने को मुक्त हैं। पद 5 में पौलुस कहता है, "उसकी स्तुति और बड़ाई युगानुयुग होती रहे। आमीन।"

पद 15 और 16 में देखिए कि परमेश्वर द्वारा पौलुस का उद्धार केवल उसी के लिए नहीं था। "परन्तु परमेश्वर की, जिसने मेरी माता के गर्भ ही से मुझे ठहराया और अपने अनुग्रह से मुझे बुला लिया। जब इच्छा हुई कि मुझ में अपने पुत्र को प्रगट करे।" यहां तीन बातें हैंः मुझे ठहराया, बुला लिया, इच्छा हुई कि मुझ में अपने पुत्र को प्रगट करें।

तब वह उद्देश्य वाक्यांश काम में लेता है, "कि" अर्थात वह यह बताना चाह रहा है कि परमेश्वर ने क्यों ठहराया और क्यों बुलाया और क्यों अपने पुत्र को उस पर प्रकट किया।

पौलुस कहता है, "कि" मैं क्या करुं? अन्यजातियों में उसका सुसमाचार सुनाऊं। मैं यहां आपको, गलातियों की पत्री के अध्याय 1 में एक वाक्यांश दिखाना चाता हूं जो परमेश्वर के उद्देश्यों से संबन्धित उसकी आशिषों को प्रकट करता है।

पौलुस का उद्धार क्यों किया गया था? परमेश्वर ने पौलुस पर आश्चर्यजनक अनुग्रह प्रकट क्यों किया? उसमें परमेश्वर का एक उद्देश्य था। क्यों? कि वह सब जातियों में अनुग्रह का प्रचारक बने। इसलिए नहीं कि वह अनुग्रह से संतृप्त आराधना में बैठा रहे।

नहीं, परमेश्वर का उद्देश्य बहुत गहरा था। पौलुस को किसी विशेष कारण से अनुग्रह मिला था। मनुष्यों को सुसमाचार–अनुग्रह सुनाने के लिए। यह एक व्यक्तिगत प्रकाशन था जो सार्वजनिक उद्देश्य के निमित्त था। आप परिदृश्य देख रहे हैं न? यही परिदृश्य हम सबों के जीवन का है।

हम अपने अलग किए जाने का आनन्द मनाते हैं। उसने हमें अपने अनुग्रह द्वारा बुलाया है। उसने मसीह को हम पर प्रकट किया है। मेरे मित्रों हमारा जन्म भारत में क्यों हुआ है जहां सुसमाचार प्रचार आसान है? आप भारतवर्ष में बैठकर यह न सोचें, "मैं इन झुग्गियों में क्यों जन्मा?" या यह सोचें, "मैं ने उस परिवेश में जन्म क्यों नहीं लिया जहां सुसमाचार नहीं है?" इसमें आपकी कोई विशेषता नहीं है। आप इसमें कुछ नहीं कर सकते थे। यह सब परमेश्वर के अनुग्रह से हुआ।

हमारे पास यह सुसमाचार है। उसके अनुग्रह से ही हमारे पास यह सुसमाचार है। यह हमारे आनन्द का कारण है। यह परमेश्वर की स्तुति का कारण है परमेश्वर को धन्यवाद देने का कारण है परन्तु यह एक महान उत्तरदायित्व भी है। परमेश्वर ने हमें सुसमाचार में निहित अनुग्रह भी किसी कारण से ही दिया है–सुसमाचार प्रचार के निमित्त। इसलिए नहीं कि बैठकर उसे जमा करते रहें।

नहीं, परमेश्वर ने हमें अनुग्रह इसलिए दिया है कि हम अपने निवासस्थान और कार्यस्थल पर, दुर्गम स्थानों पर, संकटपूर्ण स्थानों पर जाकर इस सुसमाचार का प्रचार करें क्योंकि यह बड़े आनन्द का समाचार है। यह

संसार का सबसे अच्छा शुभ सन्देश है। यही वह महान एवं महिमामय सन्देश है जिसका आपको और मुझे प्रचार करना है।

यह अनुग्रह हमारे पास होने का कारण यह है कि हम इसका प्रचार करें। हम इस संसार में प्रचार करने के लिए मुक्त किए गए हैं। कल्पना कीजिए कि आप उत्तरपूर्वी भारत में, नेपाल के निकट यात्रा करते हैं और कई गावों से होकर बढ़ रहे हैं। आपको ऐसा प्रतीत होगा कि एक गांव दिखाई देता है– दूरस्थ, अकेला एक गांव!

वे आपको सम्मान से बैठाते हैं, आपको पानी पीने के लिए देते हैं, चाय पिलाते हैं। वे आपको भोजन परोसते हैं, अत्यधिक सत्कारी जन! आप उनके साथ बातें कर रहे होते हैं कि शनैः शनैः वहां तीस स्त्री–पुरुष एकत्र हो जाते हैं। उनमें से एक ने भी सुसमाचार कभी नहीं सुना।

आज पहली बार वे आपसे सुसमाचार सुन रहे हैं। वे पीढ़ियों से परमेश्वर से मिलाप करने का प्रयास कर रहे हैं। आपके पास अवसर है कि उनकी आंखों में झांक कर कहें, "आप मुक्त हैं। आपको अब परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं है। आपको अपना मार्ग खोजने की आवश्यकता नहीं है। आपको परमेश्वर प्राप्ति के लिए विधि–विधान की आवश्यकता नहीं है। मेरे पास सुसमाचार है– उसने आपके लिए मार्ग खोज लिया है।

"वह आपके पास मसीह के मानवरुप में आया है। वह 33 करोड़ देवताओं में से एक नहीं है। वह एकमात्र सृजनहार परमेश्वर है। उसने आपके कर्मों की अपेक्षा अपने अनुग्रह से आप तक आने का मार्ग खोज लिया है। वह अनुग्रह ही के द्वारा आपको मोक्ष दिलाएगा और इसी पल आपको शान्ति देगा। आपको केवल उसमें विश्वास करना है।"

यह सुसमाचार है। यह उन ग्रामवासियों के लिए ही नहीं आप सब के लिए शुभ सन्देश है।

आपका अतीत कैसा भी रहा। आपका वर्तमान जीवन कैसा भी हो, पिछले सप्ताह आपने पाप के संबन्ध में कैसा भी संघर्ष किया हो, आप अपने घर में या कार्यस्थल पर कुछ भी कर रहे हों, चाहे आपका पाप कैसा भी कुरुप क्यों न हो, चाहे आप परमेश्वर के समक्ष सर्वथा अयोग्य प्रतीत करते हों, देवियों और सज्जनों, आप मुक्त हैं।

आप परमेश्वर के अनुग्रह से मुक्त हो गए हैं। उसने अपने अनुग्रह द्वारा आपको क्षमा कर दिया है। आप उसकी सुइच्छा के निमित्त कुछ नहीं कर सकते। वह तो यीशु में आपकी पहचान से पहले ही प्रसन्न है। भजन 103:12, "उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है, उसने हमारे अपराधों को हमसे उतनी ही दूर कर दिया है।"

यशायाह 43:25, "तेरे पापों को स्मरण न करुंगा।"

1 यूहन्ना 1:9, "हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।"

1 पतरस 2, "वह तुम्हें चुने हुए, राजसी याजक, पवित्र जाति, परमेश्वर की निज प्रजा जिस पर पूर्व में दया नहीं हुई, और अब है।"

रोमियों 9– तुम पर परमेश्वर की दया अपने नहीं परमेश्वर की इच्छा और प्रयास के कारण है।

उसने आप तक पहुंचने के लिए मार्ग बनाया। अनुग्रह दौड़कर आपके पास आया और आप अनुग्रह के द्वारा मुक्त हैं। यह सुसमाचार है– संसार का सर्वोत्तम समाचार। यही एकमात्र परमेश्वर से मेल का माध्यम है– अनुग्रह द्वारा, अनुग्रह द्वारा केवल अनुग्रह!